

महिलाओं के काम का महत्व



1



2



3



4



5



6



7



8

महिलाओं के काम को मान्यता

इस वर्ष सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के बढ़ने की दरकार 7.5 प्रतिशत रही. इसका मुख्य श्रेय जाता है हमारे विदेशी निवेश. उद्योग मजदूर और सर्विस सेक्टर से...

देखा मैरिया मैरी तरह कैम्पूरी में काम करने वाली देहा की किचनरी सेवा करते हैं। हम देहा की अर्थव्यवस्था में योगदान देने हैं. वित्त मंत्री भी इस बात को कह रहे हैं।

1

मैं भी तुम्हारी तरह गांव में खेती ही करता दखता तो खरी तरहकी नहीं कह पाता. मैरिया साथ भी किसानाजी छोड़े और मेरे साथ शाहर चलो।

हैं सरकारी जमान खेतों को कौन संभालेगा ?

अरे घर में औरतें नहीं हैं क्या, वो खोलेंगी खेत।

2

बात तो रही कह रहे हो अब देहा जा रहे तो आर पात के खेतों में आरती बहुत कम ही जलद आते हैं. जब बाकी घरों की औरतों ने कम कर सकली है तो हमारी क्यों नहीं ?

वही तो, वैसे भी इन औरतों को पुरे दिन घर में काम ही क्या होता है। बस बच्चे पालना, खाना बनाना और टाइन पात करने के लिए कामवारी कर देनाभार कर दी। और इस सब से घर में पैसा बोंडे ही जाता है. घर चलाने के लिए भी इनकी भी कुछ मैरिया करनी पड़ेगी न !

3

पात बेटी राधा दीदी उसकी बात चुन लेती हैं और

अरे, के पैराल हूँ कि किपात के बेटे होकर चुन किसानाजी नहीं करना चाहते ?

चाहते तो हैं राधा दीदी लेकिन उनमें पैर नहीं भरता और किपात की तरह मुझे कहीं में एकक आरहवा नहीं करली।

4

मैंने माना कि आरकल छोटी को कम महत्व दिया जा रहा है. लेकिन इसका मतलब ये नहीं आती है कि ये अनपढ़ी काम नहीं हैं या दुबारे कर्माते से छोटे हैं। दरमजदर से छोटे काम हैं किन्तु मैरिया सेक्टर के कामों के धर्म में रखा जाता है और वहींलिए देहा दिखावा जाता है की मानो ये हमारे देहा के सकल घरेलू उत्पाद में कोई योगदान ही नहीं देते।

हैं देहा के बाजट में इनका स्थान न के बराबर होता है।

5

तो पहली बात, ये सोचना कि छोटी क देहा की उन्नति में कुछ योगदान नहीं है ये सही नहीं है। नर्व देहा में परिचित के लिए कितने जाते वाले सगी कर्माते को बदल कर दर्जा है और इनमें महिलाओं द्वारा कितने जाते वाले काम भी शामिल हैं।

अरे तो क्या आप ये कह रही हैं कि हमारी औरतों भी बाजट में योगदान देती हैं हा हा हा !

हैंने की बात नहीं बनिके ये सब है। तुम्हारा ये सोचना सही नहीं है कि औरतों द्वारा कितने जाते वाले घरेलू कामों का कोई आर्थिक महत्व नहीं होता।

6

अब मैं सज्जदी गर्दी का काम पैसों से जुड़ा है इसलिए उसकी मान दिया जाता है. महिलाओं का काम पैसों से नहीं जुड़ा तो उसे काम नहीं माना जाता।

7

अरे तो क्या अब हमें घर की औरतों को भी तनख्वाह देनी होगी ?

तनख्वाह भरने ही न दो पर मात्र तो दे दो पर का काम, पशुपालन, खेती का बर्ताने की देखभाल करना तो भी काम तो इन सबका एक मूल्य है।

अरे! वह तो बिल्कुल नर्व खीच होगी।

8

# निर्णय में बराबरी की भागीदारी



1



2



3



4



5



6



7



8